

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 19 — दावाग्नि का पान

5 October 2026



भटके गोप-बालकों और गोधन को चारों ओर से घेरती प्रचण्ड दावाग्नि के बीच, व्रज के प्रभु केवल यही कहते हैं कि अपनी आँखें मूँद लो — और वे समूची ज्वाला को अपने भीतर समेट लेते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह उन्नीसवाँ अध्याय छोटा है, किन्तु इसमें व्रज के गोप-बालकों के कृष्ण पर अटूट विश्वास का एक अत्यन्त मधुर प्रमाण छिपा है। खेल में मग्न बालक अपनी गायों को एक अपरिचित वन में भटकने देते हैं; और जब सब उस खोए हुए गोधन को ढूँढ़ ही रहे होते हैं, तभी अकस्मात् एक भीषण दावाग्नि उठकर उन सबको घेर लेती है। न कोई योजना, न कोई शस्त्र, न कोई बचने का मार्ग — केवल एक ऐसे प्रभु हैं जो अपने भयभीत सखाओं से कहते हैं कि आँखें मूँद लो, और फिर वे स्वयं उस समूची अग्नि को पी जाते हैं। शुकदेवजी यह लीला राजा परीक्षित को पिछले अध्याय की गर्जना के पश्चात् एक शान्त, दिव्य उपसंहार के रूप में सुनाते हैं।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण

- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 19 (उन्नीसवाँ अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: दावाग्नि का पान
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: यमुना के समीप व्रज के वन, और भाण्डीरवन का विशाल वट-वृक्ष
- केंद्रीय विषय: गोधन का घने वन में भटक जाना, गोपों को घेरने वाली अकस्मात् दावाग्नि, और कृष्ण द्वारा अपने जनों की रक्षा हेतु उस अग्नि का पान
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 19, श्लोक 1-16
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण संस्करण)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

अठारहवें अध्याय में प्रलम्ब नामक एक असुर छद्म रूप धारण कर गोप-बालकों के खेल में सम्मिलित हो गया था, इस आशा में कि वह कृष्ण और बलराम को हर ले जाएगा। वाहन-सवार के खेल में हारने पर उसने बलराम को अपने कन्धे पर उठाया और उन्हें हर ले जाने की नीयत से सीमा के पार दौड़ पड़ा। अपना असली विशाल असुर-रूप प्रकट करने पर बलराम ने सहज ही उसके सिर पर एक प्रबल मुष्टि-प्रहार किया और उसे वहीं मार गिराया — जिससे गोप प्रसन्नता से आश्चर्यचकित हो उठे और देवताओं ने आशीर्वाद की वर्षा की।

गोधन अपरिचित वन में भटक जाता है

शुकदेवजी ने अपनी कथा फिर से आरम्भ की। जब गोप-बालक अभी भी खेल के आनन्द में डूबे थे, तब उनकी गायें बिना किसी की देखरेख के स्वच्छन्द विचरती-विचरती दूर निकल गईं। हरी-हरी घास के लोभ से कदम-कदम खिंचती हुई वे बिना पीछे देखे एक घने, अपरिचित वन में गहरे उतर गईं।

श्रीशुक उवाच

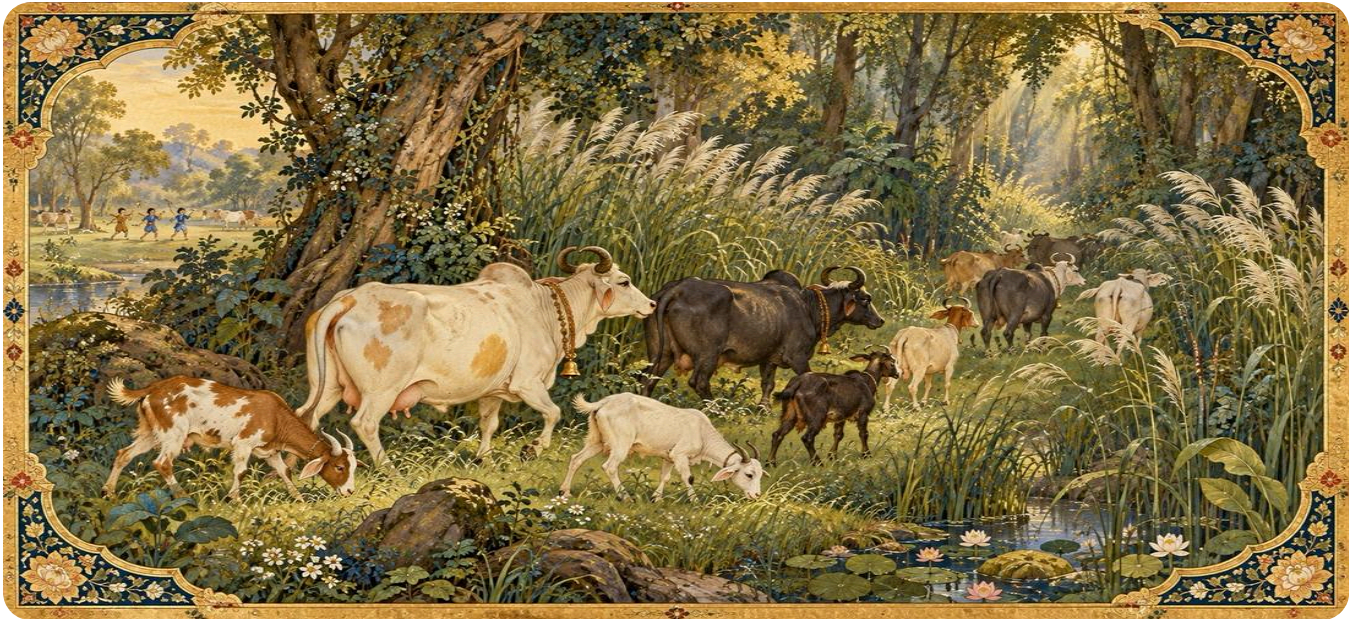
क्रीडासक्तेषु गोपेषु तद्भावो दूरचारिणीः ।

स्वैरं चरन्त्यो विविशुस्तृणलोभेन गह्वरम् ॥ १ ॥

śrī-śuka uvāca krīḍāsakteṣu gopeṣu tad-gāvo dūra-cāriṇīḥ svairam carantyo viviśus tṛṇa-lobhena gahvaram

अर्थ: श्री शुकदेवजी ने कहा: खेल में मग्न गोप-बालकों की गायें स्वच्छन्द विचरती हुई दूर निकल गईं और हरी घास के लोभ से एक घने, अपरिचित वन में प्रविष्ट हो गईं। (स्कन्ध 10, अध्याय 19, श्लोक 1)

बकरियाँ, गायें और भैंसें एक वन से दूसरे वन में बढ़ती गईं, जब तक दिन की बढ़ती गर्मी से वे अत्यन्त पिपासित न हो गईं। करुण स्वर में पुकारती हुई वे जल की आशा में ईषिका नामक नरकुलों के एक सघन झुरमुट में घुस गईं, और वहाँ उलझकर और भी व्याकुल हो उठीं।



हरी घास के लोभ से कदम-कदम खिंचता गोधन दूर और दूर भटकता गया, जब तक वह एक घने, अपरिचित वन में खो नहीं गया (श्लोक 1-2)।

खोए हुए पदचिह्नों का अनुसरण

जब कृष्ण, बलराम और अन्य गोप-बालकों ने अपने खेल से सिर उठाकर देखा, तो एक भी पशु कहीं दिखाई न दिया। उनके हृदय पश्चाताप से भर गए, क्योंकि उस ग्रामीण जीवन में उनका गोधन ही उनकी आजीविका था, और खोजने पर भी खोए हुए गोधन का कोई निशान न मिला।

निराश न होकर उन्होंने सावधानी से खोज आरम्भ की। गायों के मुख और खुरों से कटी-मुड़ी घास की पत्तियों को, और भूमि पर ताज़े पड़े खुरों के चिह्नों को देखते हुए, सारे बालक उस धुँधली पद-रेखा का अनुसरण करने लगे, उनके हृदय चिन्ता से व्याकुल और मन खोज में लगा था।

यह धीरे-धीरे खोज उन्हें अन्ततः मुञ्ज-वन में ले गई, जहाँ उन्होंने अपना सम्पूर्ण गोधन पाया — पिपासित, थका हुआ, और अब भी व्याकुल स्वर में पुकारता हुआ, जिसका मार्ग घास-फूस के सघन जाल से अवरुद्ध था। स्वयं भी पिपासित और श्रान्त गोप-बालकों ने धीरे-धीरे उन पशुओं को झुरमुट से मुक्त कर घर की ओर लौटाना आरम्भ किया।

तब कृष्ण ने मेघ-गर्जन के समान गम्भीर स्वर में अपनी गायों को पुकारा, और अपने ही नाम की ध्वनि सुनते ही वे भयभीत पशु प्रसन्नता से भरकर तुरन्त पुनः बोल उठे।

ता आहूता भगवता मेघगम्भीरया गिरा ।

स्वनाम्नां निनदं श्रुत्वा प्रतिनेदुः प्रहर्षिताः ॥ ६ ॥

tā āhūtā bhagavatā megha-gambhīrayā girā sva-nāmnām ninadam śrutvā pratineduḥ praharṣitāḥ

अर्थ: मेघ-गर्जन के समान गम्भीर स्वर में प्रभु द्वारा पुकारी गई गायें अपने ही नामों की ध्वनि सुनकर हर्षित हो तुरन्त उत्तर देने लगीं। (स्कन्ध 10, अध्याय 19, श्लोक 6)

चारों ओर उठती दावाग्नि

गोधन के एकत्र होते ही एक नया संकट आ पड़ा। विधि की इच्छा से उस ग्रीष्म-वन में चारों ओर एक महान् दावाग्नि भड़क उठी, प्रचण्ड वायु से प्रेरित होकर, और अपनी भूखी लपटों से मार्ग में आने वाले प्रत्येक जीवित-निर्जीव को निगलने लगी।

ततः समन्ताद्देवधूमकेतु-

र्यदृच्छयाभूत् क्षयकृद् वनौकसाम् ।

समीरितः सारथिनोल्बणोल्मुकै-

र्विलेलिहानः स्थिरजङ्गमान् महान् ॥ ७ ॥

*tataḥ samantād dava-dhūmaketur yadṛcchayābhūt kṣaya-kṛd vanaukasām samīritaḥ
sārathinolbaṇolmukair vilelihānaḥ sthira-jaṅgamān mahān*

अर्थ: तब विधि की इच्छा से मृत्यु की धूम्र-ध्वजा के समान एक महान् दावाग्नि चारों ओर उठ खड़ी हुई, प्रचण्ड वायु से और भी प्रबल होकर, और अपनी लपलपाती लपटों से उस वन के समस्त जीवित-निर्जीव पदार्थों को निगलने लगी। (स्कन्ध 10, अध्याय 19, श्लोक 7)

चारों ओर से बढ़ती इस ज्वाला से घिरे गोप और उनके पशु भय से व्याकुल हो उठे। भागने का कोई मार्ग शेष न था। जैसे मृत्यु-भय से पीड़ित मनुष्य हरि की शरण में दौड़ते हैं, वैसे ही भयभीत बालक और पशु अपने एकमात्र आश्रय कृष्ण और बलराम की ओर दौड़े और व्याकुल स्वर में पुकार उठे।



वन में चारों ओर अकस्मात् दावाग्नि उठ खड़ी होती है, और भयभीत गोप तथा गोधन कृष्ण एवं बलराम की शरण में दौड़ते हैं (श्लोक 7-8)।

“हमारा एकमात्र आश्रय आप ही हैं”

अग्नि और धूम्र से घिरे गोपों ने अपने भय को एक ही करुण प्रार्थना में उड़ेल दिया, दोनों भाइयों को नाम से पुकारते हुए और घेरती अग्नि से बचाए जाने की याचना करते हुए।

कृष्ण कृष्ण महावीर हे रामामोघविक्रम ।

दावाग्निना दह्यमानान् प्रपन्नांस्त्रातुमर्हथः ॥ ९ ॥

kṛṣṇa kṛṣṇa mahā-vīra he rāmāmogha-vikrama dāvāgninā dahyamānān prapannāṁs trātum arhathaḥ

अर्थ: “हे कृष्ण, कृष्ण, महावीर! हे अमोघ-पराक्रमी राम! हम इस दावाग्नि से जल रहे हैं और आपकी शरण में आए हैं — हमें बचाने की कृपा करें।” (स्कन्ध 10, अध्याय 19, श्लोक 9)

उन्होंने अपनी याचना को और भी आगे बढ़ाया, प्रभु को लगभग बन्धु के समान स्मरण कराते हुए कि जो उनके अपने हैं, उन्हें कभी इस प्रकार कष्ट नहीं सहना चाहिए, क्योंकि समस्त धर्म के ज्ञाता वे ही उनका आश्रय और अन्तिम शरण-स्थल हैं।

“आँखें मूँद लो, भय मत करो”

अपने प्रिय सखाओं की असहाय पुकार सुनकर, भगवान् हरि ने किसी शक्ति-प्रदर्शन से नहीं, अपितु कुछ सहज, कोमल शब्दों से उत्तर दिया।

श्रीशुक उवाच

वचो निशम्य कृपणं बन्धूनां भगवान् हरिः ।

निमीलयत मा भैष्ट लोचनानीत्यभाषत ॥ ११ ॥

śrī-śuka uvāca vaco niśamya kṛpaṇaṁ bandhūnāṁ bhagavān hariḥ nimīlayata mā bhaiṣṭa locanānīty abhāṣata

अर्थ: श्री शुकदेवजी ने कहा: अपने बन्धुओं की करुण पुकार सुनकर भगवान् हरि ने कोमल स्वर में कहा: “अपनी आँखें मूँद लो, और भयभीत न हो।” (स्कन्ध 10, अध्याय 19, श्लोक 11)

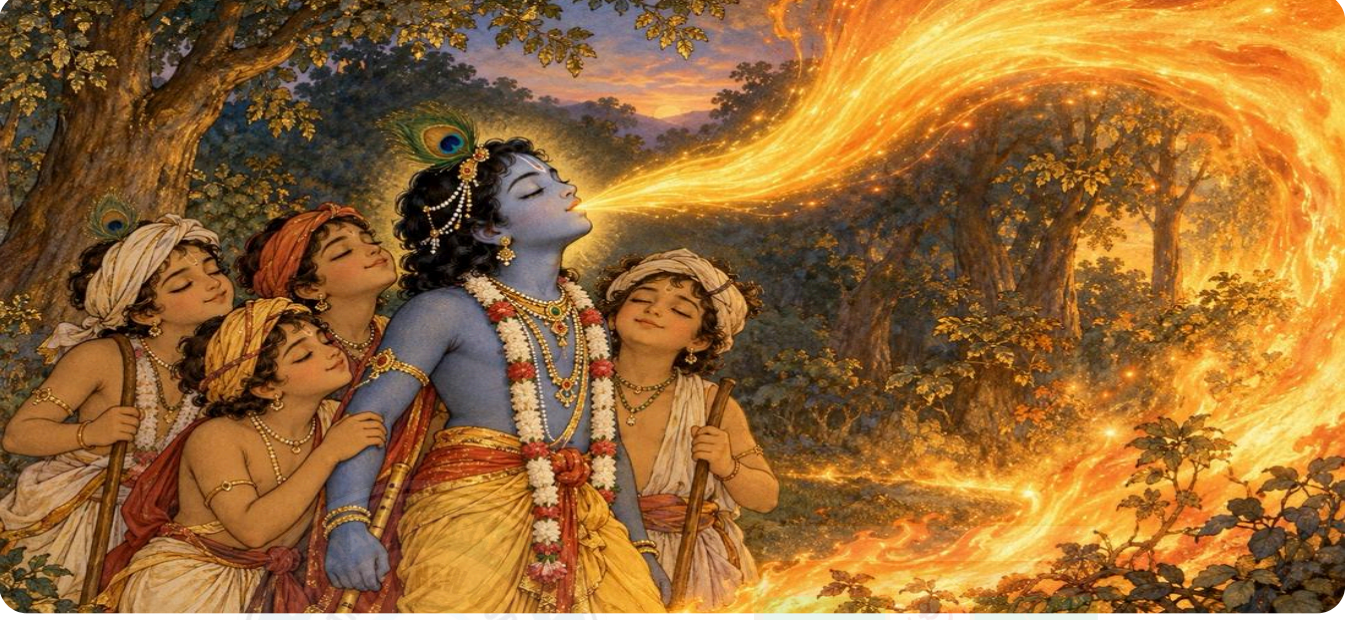
बिना किसी प्रश्न या विलम्ब के बालकों और पशुओं ने ठीक वैसा ही किया — आँखें मूँद लीं और केवल यह कहा, “ऐसा ही हो।” और उस विश्वासपूर्ण अन्धकार के क्षण में, योग के स्वामी प्रभु ने उस समूची भीषण ज्वाला को अपने मुख में समेट लिया और पी गए, जिससे सब उस संकट से तत्काल मुक्त हो गए।

तथेति मीलिताक्षेषु भगवानग्निमुल्बणम् ।

पीत्वा मुखेन तान्कृच्छ्राद् योगाधीशो व्यमोचयत् ॥ १२ ॥

*tatheti militākṣeṣu bhagavān agnim ulbaṇam pītvā mukhena tām kṛcchrād yogādhīśo
vyamocayat*

अर्थ: “ऐसा ही हो” कहकर उन्होंने आँखें मूँद लीं; और योग के स्वामी भगवान् ने उस भीषण अग्नि को अपने मुख में समेटकर पी लिया, और उन्हें तत्काल उस संकट से मुक्त कर दिया। (स्कन्ध 10, अध्याय 19, श्लोक 12)



कृष्ण के वचन पर बालक और गोधन आँखें मूँद लेते हैं, और योग के स्वामी समूची भीषण ज्वाला को अपने भीतर समेट लेते हैं (श्लोक 11-12)।

भाण्डीरवन में सुरक्षित जागरण

जब गोपों ने पुनः अपनी आँखें खोलीं, तो गरजती अग्नि का कोई चिह्न शेष न था। उन्होंने स्वयं को, अपने सम्पूर्ण गोधन सहित, भाण्डीरवन के विशाल वट-वृक्ष के नीचे सुरक्षित खड़ा पाया — उस स्थान से कुछ ही क्षण पहले जहाँ उन्होंने आँखें मूँदी थीं, उससे कहीं दूर। एक-दूसरे को जीवित और अक्षत देखकर उनके मन आश्चर्य और अविश्वास से भर गए।



आँखें खोलते ही गोप स्वयं को और अपने सम्पूर्ण गोधन को भाण्डीरवन के विशाल वट-वृक्ष के नीचे सुरक्षित पाते हैं (श्लोक 13-14)।

इस आश्चर्य पर मन में विचार करते हुए गोपों ने समझा कि यह कृष्ण की अपनी योगमाया से प्रकट हुई योग-शक्ति ही थी, जिसने उन्हें अग्नि के पार सुरक्षित पहुँचाया। यह उद्धार इतना सम्पूर्ण था कि वे केवल यही मान सके कि उनका प्रिय सखा कोई सामान्य बालक नहीं, अपितु उनके मध्य विचरण करता एक अमर तत्त्व है।

कृष्णस्य योगवीर्यं तद् योगमायानुभावितम् ।

दावाग्नेरात्मनः क्षेमं वीक्ष्य ते मेनिरेऽमरम् ॥ १४ ॥

kṛṣṇasya yoga-vīryaṁ tad yoga-māyānubhāvitam dāvāgner ātmanaḥ kṣemaṁ vīkṣya te menire 'maram

अर्थ: कृष्ण की उस योग-शक्ति को, जो उनकी स्वयं की योगमाया से प्रकट होकर उन्हें दावाग्नि से सुरक्षित ले आई थी, देखकर गोपों ने उन्हें अमर मान लिया। (स्कन्ध 10, अध्याय 19, श्लोक 14)

बाँसुरी ब्रज को घर बुलाती है

सन्ध्या होते ही कृष्ण ने गोधन को इकट्ठा किया और बलराम सहित ब्रज की ओर लौट चले, धीरे-धीरे बाँसुरी बजाते हुए, जबकि गोप-बालक उनके चारों ओर उनकी स्तुति गाते चल रहे थे। ब्रज की गोपियों के लिए, जो उस दीर्घ और अनिश्चित दिन भर व्याकुल होकर प्रतीक्षा करती रही थीं, गोविन्द को लौटते देखना एक शुद्ध, असीम आनन्द था।

गोपीनां परमानन्द आसीद् गोविन्ददर्शने ।

क्षणं युगशतमिव यासां येन विनाभवत् ॥ १६ ॥

अर्थ: गोविन्द के दर्शन से गोपियों को परम आनन्द हुआ, क्योंकि उनके लिए उनके बिना बीता हर एक क्षण सौ युगों के समान प्रतीत होता था।
(स्कन्ध 10, अध्याय 19, श्लोक 16)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. अदेखी इच्छा दूर तक भटकाती है। हरी घास के स्वाद के अतिरिक्त कुछ भी न होने पर भी, कदम-कदम खिंचता गोधन सुरक्षा छोड़कर ऐसे वन में चला गया जिससे वह स्वयं मार्ग न पा सका (श्लोक 1-2)। बिना सोचे-समझे भोगी गई एक छोटी-सी लालसा हमें अपने इच्छित स्थान से आश्चर्यजनक रूप से दूर ले जा सकती है।
2. प्रभु अपने जनों को नाम से जानते और पुकारते हैं। जब कृष्ण मेघ के समान स्वर में पुकारते हैं, तो खोई हुई गायें तुरन्त उनकी ध्वनि पहचान लेती हैं और हर्ष से उत्तर देती हैं (श्लोक 6)। हम कितनी भी दूर क्यों न भटक जाएँ, प्रभु का अपनी आत्मा को पुकार सदा पहचान और प्रतिध्वनि के साथ ही आती है।
3. उनके अतिरिक्त कोई आश्रय नहीं। अग्नि से घिरे, बिना किसी मार्ग के, गोप कोई बचने की युक्ति नहीं रचते; वे केवल कृष्ण की ओर दौड़ते हैं और घोषित करते हैं कि वे ही उनका एकमात्र आश्रय हैं (श्लोक 9-10)। सच्ची शरण ठीक वहीं से आरम्भ होती है जहाँ हर अन्य उपाय विफल हो जाता है।
4. श्रद्धा परिणाम देखे बिना ही कार्य करती है। कृष्ण केवल यही माँगते हैं कि उनके सखा आँखें मूँद लें और विश्वास करें; वे तुरन्त, किसी प्रमाण या तर्क के बिना, वैसा ही करते हैं (श्लोक 11-12)। भक्त की श्रद्धा संकट के दृष्टिगोचर रूप से समाप्त होने की प्रतीक्षा नहीं करती, वह प्रभु के वचन पर तुरन्त विश्वास कर लेती है।
5. दिव्य शक्ति कार्य करते हुए भी छिपी रहती है। कृष्ण अपनी योगमाया से सबकी रक्षा इतनी शान्ति से करते हैं कि उनके सखाओं को किसी खुले दिव्य प्रदर्शन के स्थान पर केवल एक अमर उपस्थिति का आभास होता है (श्लोक 14)। प्रभु की कृपा अधिकांशतः सामान्य घटनाओं की सतह के नीचे ही गतिमान रहती है, जिसे चमत्कार के रूप में देखे जाने के स्थान पर पहचाने जाने की अपेक्षा होती है।
6. उनसे वियोग स्वयं एक अग्नि है। गोविन्द के लौटने पर गोपियों का यह आनन्द, जब एक ही दिन सौ युगों के समान बीता (श्लोक 16), हमें स्मरण कराता है कि प्रभु की उपस्थिति की चाह स्वयं एक प्रकार का दाह है, जिसे केवल उनकी समीपता ही शान्त कर सकती है।

एक भक्तिमय चिन्तन

इस छोटे अध्याय से जो हृदय में टिक जाता है, वह है उद्धार की सहज सरलता। कृष्ण न वर्षा बुलाते हैं, न किसी शस्त्र से अग्नि पर आघात करते हैं, न ही अपने सखाओं के समक्ष लपटों को ऐसे विभाजित करते हैं कि वे विस्मय से देखते रहें। वे बस यही माँगते हैं कि संकट के समय जो सबसे कठिन लगता है वही करें — संकट को देखना छोड़ दें, आँखें मूँद लें, और जो उनकी स्वयं की आँखें नहीं सुलझा सकतीं, उसे किसी और पर पूर्णतः छोड़ दें। वे बिना यह समझने की आवश्यकता के कि यह कैसे होगा, तुरन्त वैसा ही करते हैं। सम्भवतः यही इस लीला का वास्तविक आश्चर्य है, अग्नि के पान से भी अधिक — कि भयभीत बालकों और पशुओं से अपनी ही दृष्टि अपने प्रभु को सौंप देने की माँग की जा सके,

और वे बिना क्षणभर की हिचक के ऐसा कर दें। हम अपने जीवन का इतना अधिक भाग अपनी आँखें अपनी समस्याओं पर टिकाए रखने में बिता देते हैं, मानो उन्हें देखते रहना ही उन्हें वश में कर लेगा। यह अध्याय धीरे से एक दूसरा मार्ग सुझाता है — कि एक गहरी सुरक्षा उसी क्षण खुल जाती है जब हम स्वयं देखने का हठ छोड़ देते हैं, और उस प्रभु के वचन में विश्राम करने लगते हैं जो हमसे प्रेम करते हैं।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज जब आप में कोई चिन्ता या भय उभरे, तो गोपों के इस उदाहरण का एक छोटा-सा अनुसरण कीजिए। कुछ क्षण रुकिए, धीरे से आँखें मूँद लीजिए, और मन-ही-मन अपनी चिन्ता को वैसे ही प्रभु को समर्पित कर दीजिए, अपनी सजगता के स्थान पर उन्हीं पर भरोसा करते हुए कि वे आपको उसके पार ले जाएँगे। आँखें मूँदकर यह छोटा श्रद्धा-भरा कार्य आपका दैनिक स्मरण बने कि जिन्होंने एक बार अपने सखाओं के लिए दावाग्नि पी ली थी, वे अभी भी आपके उतने ही निकट हैं। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह उन्नीसवाँ अध्याय एक संक्षिप्त किन्तु अत्यन्त कोमल लीला सुनाता है: अपरिचित वन में भटकता गोधन, उन्हें ढूँढ़ने गए गोपों को घेरती अकस्मात् दावाग्नि, और अपने सखाओं के केवल विश्वास-भरे एक वचन पर कृष्ण का उस समूची ज्वाला को अपने भीतर समेट लेने का शान्त, अभिभूत कर देने वाला कर्म। शुकदेवजी राजा परीक्षित को दिखाते हैं कि प्रभु उन लोगों की पुकार कितनी पूर्णता से सुनते हैं जिनके पास अन्य कोई मार्ग शेष नहीं रहता, और वे बदले में उनसे कितना कम माँगते हैं — केवल यह कि वे आँखें मूँद लें और विश्वास करें। पिछले अध्याय में प्रलम्ब के वध की गर्जना से लेकर यमुना के इन वनों में हुए इस कोमल उद्धार तक, ब्रज के प्रभु बार-बार यह प्रमाणित करते हैं कि जो उन्हें अपना एकमात्र आश्रय मानते हैं, उन्हें वे किसी भी अनिष्ट से स्पर्श तक न होने देंगे। हम भी अपने भय के समक्ष आँखें मूँद लेने और उनकी रक्षा के लिए हृदय खोल देने की यह शिक्षा ग्रहण करें।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण संस्करण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), उन्नीसवाँ अध्याय।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-19-swallowing-the-forest-fire-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

